ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 138-141

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

हिन्दी और मगही के सार्वनामिक रूप : एक तलनात्मक विवेचन

मुकेश कुमार झा

सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग देवेन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बेल्थरा रोड, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 18.03.2020, Revised- 24.03.2020, Accepted - 29.03.2020 E-mail: vidyagraphics2020@gmail-com

सारांश : 'सर्वनाम' उस विकारी शब्द को कहते हैं, जो पूर्वापरसम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है। यथा– मैं, तुम, यह आदि। सर्व (सबऋ)नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम की विशेषता यह है कि संज्ञा से जहाँ उसी वस्तु का बोध होता है, जिसका वह नाम है, वहाँ सर्वनाम में पूर्वापरसम्बन्ध के अनुसार किसी भी वस्तु का बोध होता है। 'घोड़ा' कहने से केवल घोड़े का बोध होता है, घर, सड़क का नही, किन्तु वह कहने से पूर्वापरसम्बन्ध के अनुसार ही किसी वस्तु का बोध होता है।

कुंजीभूत शब्द– विकारी शब्द, पूर्वापरसम्बन्ध, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, तिर्यक, मगही भाषा,

हिन्दी में सर्वनामों की संख्या अत्यल्प है, फिर भी हिन्दी के व्याकरण उनकी संख्या निश्चित करने में एकमत नहीं हो सके। पंडित के शवराम भट्ट ने 'हिन्दी व्याकरण' में सात सर्वनामों को माना है तो पं0 रामचरण सिंह ने 'भाषा प्रभाकर' में आठ एवं माधव प्रसाद भुक्ल ने 'बाल बोध व्याकरण' में सर्वनामों की संख्या सत्रह मानते हैं। आचार्य देवेन्द्र नाथ भार्मा हिन्दी में कुल दस सर्वनाम की सत्ता स्वीकारते हैं और डॉ0 बदरीनाथ कपूर ने पंद्रह सर्वनामों का उल्लेख किया है, परन्तु हिन्दी में पंडित कामता प्रसाद गुरू के अनुसार, ग्यारह सर्वनाम ही मान्य है, जो निम्न है– मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

मगही भाषा में पंद्रह सर्वनाम है– हम (मैं, हम), तूँ, तो (तुम, तू, आप), अपने, रउआ (आप), ऊ (वह, वे), ई, (यह, ये), कोई कुछ/कुच्छो, के (कौन), कथी, कौची (क्या), जे (जो), से (सो), अपने (निजवाचक आप) और खुद।

हिन्दी और मगही दोनों भाषाओं में सर्वनाम के छह भेद होते हैं– पुरूषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक और प्रश्नवाचक। दोनों भाषाओं के सार्वनामिक रूपों की तुलना के लिए अनेक रूपों को आमने–सामने रखकर देख लेना अपेक्षित प्रतीत होता है :

'पुरूषवाचक सर्वनाम' स्त्री या पुरूष के नाम के बदले आते हैं। उत्तम–पुरूष में लेखक या वक्ता आता है, मध्यमपुरूष में पाठक या श्रोता और अन्यपुरूष में लेखक और श्रोता को छोड़ अन्य लोग आते हैं।

उत्तम पुरूश (हिन्दी– मैं, मगही–हम)

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम,हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझे, मेरे लिए	हमें, हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझसे, मुझपर	हममें, हमपर।

हिन्दी के उत्तम पुरूष के सर्वनाम रूपों को संक्षिप्त में इस प्रकार समझ सकते हैं :

एकवचन–कर्त्ता मैं, मैंने, से, को, में, पर के साथ तिर्यक रूप मुझ, मुझसे, मुझको, मुझमें, मुझपर, कर्म और संप्रदान मुझे, सम्बन्ध मेरा, संप्रदान के लिए।

बहुवचन–कर्त्ता, हम, ने, को, से, में, पर के साथ तिर्यक रूप भी हम, हमने, हमको, हमसे, हममें, हम पर, कर्म और संपप्रदान हमें, सम्बन्ध हमारा, संप्रदान हमारे लिए।

मगही– मगही में बहुवचन में सर्वनाम के दो रूप होते हैं– हमनी और हमरनी। इन्हें क्रम ः मूल तथा वर्धित रूप कह सकते हैं। एकवचन के रूप हम, हमरा आदि हैं। मगही गीतों में एकवचन के इन्हीं रूपों के समानार्थी मोर, मोरा आदि रूपों का भी चलन है। डॉ0 सम्पत्ति अर्याणी ने इन मोर, मोरा रूपों को एकवचन का हस्व रूप तथा हम, हमारा आदि को उसका दीर्घ रूप कहा है। वस्तुतः मोर, मेरा आदि रूप भोजपुरी से गृहीत हैं। मगही भाशा में एकवचन और बहुवचन के रूप क्रमशः निम्न है–

एकवचन

मूल रूप	**गृहीत रूप**	
हम	मोर, मोरा	कर्त्ता
हमरा, हमरा के	मोरा, मोरा के	कर्म
हमरा से	मोरा से	करण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

संप्रदान	हमारा ला	मोरा ला
अपादान	हमरा से	मोरा से
सम्बन्ध	हम्मर, हमरा	मोर, मोरा, मोरी, मेरी
अधिकरण	हमरा में	मोरा में
	बहुवचन	
	मूल रूप	वर्धित रूप
कर्त्ता	हमनी	हमरनी
कर्म	हमनी के	हमरनी के
करण	हमनी से	हमरनी से
संप्रदान	हमनी ला	हमरनी ला
अपादान	हमनी से	हमरनी से
सम्बन्ध	हमनी के/केर/केरा/केरी	हमरनी के/केर/केरा/केरी
अधिकरण	हमनी में	हमरनी में

मगही में उत्तम पुरूष में मोर, मोरा, मोरी, मेरो, हम, हमरा, हम्मर, हमार, हमरे, हमनी, हमरनी रूप प्राप्त होते हैं। हिन्दी में मैं, मुझ, मुझे, मेरा, मेरे, हम, हमें, हमारे, हमारा रूप प्राप्त होते हैं। हिन्दी का मैं मगही में नहीं है, मुझ रूप भी नहीं है, इसकी जगह पर मोरा प्रयुक्त होता है।

मगही के उत्तम पुरूष सर्वनाम रूपों को संक्षिप्त में इस प्रकार समझ सकते हैं कि –

एकवचन गृहीत में कर्त्ता कारक में विकारी रूप मोरा तथा के, से, ला, से, में के साथ भी वही विकारी रूप मोरा, कर्त्ता की तरह ही कर्म और संप्रदान में भी परसर्ग रहित विकारी रूप मोरा भी तथा सम्बन्ध में एक अतिरिक्त रूप भी अकरांत मोर। एकवचन मूल में कर्त्ता कारक में हम, के, से, ला, से, में, के साथ तिर्यक रूप हमरा, कर्म और सम्बन्ध में भी विभक्ति रहित तिर्यक रूप हमरा (अतिरिक्त रूप), इसके अतिरिक्त सम्बन्ध में हम्मर, हमार और हमरे भी प्रयुक्त होता है। बहुवचन का रूप सरल है। मूल में कर्त्ता और कर्म में हमनी, कर्म में हमनी के भी (अतिरिक्त रूप)। इसके अतिरिक्त भाषा कारकों में उनके परसर्गो से युक्त होकर हमनी ही। इसी तरह बहुवचन वर्धित हमरनी भी बनता है।

मध्यम पुरूष (हिन्दी–तू, तुम; मगही–तूँ, तों)

मध्यम पुरूष का हिन्दी रूप पूरी तरह उत्तम पुरूष के अनुरूप है। मगही के कुछ रूप इस प्रकार है–

एकवचन		**बहुवचन**	
मूल	वर्धित	मूल	वर्धित
कर्त्ता–तूँ, तो तूँ,		तो, तुहुँ	तोहरनी

कर्म–तोरा, तोरा के तोहरा, तोहरा के तोहनी केतोहरनी के सम्बन्ध–तोर, तोरा, तोरी तोहर, तोहार तोहनी के/केर तोहरनी के/केर तोहरे, तोहरा केरा/केरी केरा/केरी

मध्यम पुरूष में कर्त्ता एकवचन (मूल) में अपरिवर्तित रूप ही उपलब्ध है, अतः इसमें उत्तम पुरूष की तुलना में हिन्दी से अधिक समानता है। मध्यम पुरूष में हिन्दी में तू, तुम, तुझ, तेरे, तेरा, तेरी, तुम्हें, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी आदि रूप उपलब्ध है। मगही में तूँ, तों, तोर, तोरा, तोहर, तोहनी, तोहरनी आदि रूप कारक–वचन प्रभावित विकारी स्थितियों में प्रचलित है। मुझ की तरह हिन्दी का तुझ भी मगही में किसी भी रूप में उपलब्ध नहीं है।

अन्य पुरूष (हिन्दी–वह,यह; मगही–ऊ, ई)

हिन्दी वह से एकवचन वह, उसे बहुवचन वे, उन्हें। मगही ऊ से एकवचन ऊ, ओकरा बहुवचन ओहनी, उनहनी आदि। हिन्दी से एकवचन यह, इसे बहुवचन इन्हें, ये। मगही ई से एकवचन ई, एकरा, बहुवचन एहनी, इन्हनी आदि।

हिन्दी में निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' है और मगही में इसे 'अपने' के रूप में जाना जाता है। दोनों भाषाओं में निजवाचक सर्वनाम (हिन्दी–आप; मगही–अपने) को नीचे दर्शाया जाता है, जो निम्न है–

(हिन्दी रूप–आप)

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	आप, अपने	आपलोग, आपलोगों ने
कर्म	आपको	आपलोगों को
करण	आपसे	आपलोगों से
संप्रदान	आपको/के लिए	आपलोगों को/के लिए
अपादान	आपसे	आपलोगों से
सम्बन्ध	आपका/की/के	आपलोगों का/की/के
अधिकरण	आपमें/पर	आपलोगों में/पर

(मगही रूप–अपने)

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	अपने, आप	अपने सब, आप सब
कर्म	अपने के	अपने सब के
करण	अपने सब, से,	अपने से
संप्रदान	अपने ला, अपना	अपने सब ला, अपना सब ला
अपादान	अपने सबसे,	अपने से
सम्बन्ध	अपने के, अप्पन, आपन	अपने सब के
अधिकरण	अपने में,	अपने सब में।

हिन्दी और मगही दोनों में ही 'आप' मध्यम पुरूष में आदरार्थ प्रयुक्त होता है। हिन्दी में निजवाचक के लिए आप, अपना, स्वयं, खुद आदि भाब्द प्रयुक्त होते हैं। मगही में अपने की ही प्रधानता है–

हिन्दी–आप क्या कर रहे हैं? मगही–अपने का करइथी?

हिन्दी–आपके द्वारा यह काम हो जाएगा। मगही–अपने से ई काम हो जतई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

हिन्दी–यह काम आप ही (स्वयं) हो गया। मगही–ई काम अपने हो गेलई।

निश्चयवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–हिन्दी में–यह, वह; मगही–ई, ऊ आदि।

निश्चयवाचक (हिन्दी–यह, वह; मगही–ई, ऊ)

हिन्दी : निकटवर्ती : यह

	एकवचन	बहुवचन
	यह	ये
तिर्यक –	इस	इन, इन्ह

मगही : निकटवर्ती : ई

एकवचन		बहुवचन	
मूल	वर्धित	मूल	वर्धित
ई	ई	ई (सब)	इन्ह (सब) इन्हकनी
तिर्यक – एह	एकरा	इन्ह	इनकनी, एकनी

कर्त्ता के रूप मूल रूप में ही रहते हैं और भोश इन्हकनी, इन्हकरा कारक–रूप दिए गए तिर्यक रूप के बाद उन–उन कारकों के परसर्गों के योग से बनते हैं। बहुवचन के रूप आदर वाचक भी हैं। इनसे पुरूश वाचक भाव की अभिव्यक्ति होती है।

हिन्दी : दूरवर्ती : वह

	एकवचन	बहुवचन
	वह	वे
तिर्यक –	उस	उन

मगही : दूरवर्ती : ऊ

एकवचन		बहुवचन	
मूल	वर्धित	मूल	वर्धित
ऊ	ऊ	ऊ	उनकनी, उन्हकनी
तिर्यक – ओह	ओकरा	उन्ह	ओकनी, उन्हकरा

इसमें भी बहुवचन के रूप आदरवाचक होते हैं। बहुवचन के मूल रूप ऊ के स्थान पर ऊ (सब), उन्हन (सब), उन्हनीं (सब) का भी व्यवहार होता है। इनमें सब को विकल्प से हटाया भी जा सकता है। ऊ या उन्ह के स्थान पर उखनिन या ओखनी का प्रयोग भी समस्त बहुवचन में हो सकता है।

मगही के उपर्युक्त दोनों नि चयवाचक सर्वनामों (ई, ऊ) में सिर्फ ई, ऊ, एह, ओह आदि मूल रूपों का विशेषण या विशेष्य के रूप में प्रयोग होता है। एकरा, ओकरा, इन्हकनी, उन्हकनी आदि दीर्घ रूपों का केवल विशेष्य के रूप में व्यवहार होता है।

मगही – ई तो बड़ा बढ़िया है। (विशेष्य)
ई बैला बड़ा पनीगर हइ। (विशेषण)
एकरा मारे से का मिलतओं? (विशेष्य)

हिन्दी – यह बड़ा सुन्दर है। (विशेष्य)
यह लड़का तेज है। (विशेषण)
इसको पीटने से क्या मिलेगा?(विशेष्य)

अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। हिन्दी में कोई, कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम है और मगही में केऊ, कोई, कुछ, कुच्छो आदि।

(हिन्दी–कोई; मगही–केऊ)

हिन्दी

एकवचन	बहुवचन
कोई	किन्हीं
तिर्यक – किसी	किन्हीं

मगही : केऊ, कोई

	एकवचन
कर्ता	केऊ, कोई या केहू
कर्म	केकरो, (के) या कौनों (के)
करण	केकरों से या कोनों से
संप्रदान	केकरो ला या कौनों ला
अपादान	केकरो से या कौनों से
सम्बन्ध	केकरों या कौनों के
अधिकरण	केकरों में या कौनों में।

मगही में अनिश्चयवाचक सर्वनाम का बहुवचन रूप नहीं होता। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कुछ, कुच्छो या कुच्छओं का रूप विशेष्य की तरह नियमित रूप से चलता है। जैसे– कुच्छो के, कुच्छों से आदि।

मगही में अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'स' का रूप भी विशेष्य की तरह चलता है। बहुवचन के रूप पर बल देने के लिए सबन या सभन का व्यवहार होता है; यथा–सभ के, सभन के। हाँ एक बात और हिन्दी के सर्वनामिक रूप किसी और किन्ही के बराबर का मगही में कोई रूप नहीं है। अनि चयवाचक सर्वनाम के मगही वाक्यों के कुछ उदाहरण– कोउ हम्मर बात न मानऽहे। हमरा केउ का करत।तोरा पास कुच्छे धन न हो। कुच्छुओं त दऽ।न केकरो से दोस्ती, न केकरो से बैर।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध स्थापित किया जाय, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। हिन्दी में जो, सो, सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण है और मगही में जे, से, ते आदि।

हिन्दी–जो

एकवचन	बहुवचन
जो	जो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

तिर्यक – जिस जिन, जिन्ह
मगही–जे

	एकवचन	बहुवचन
	एक दो	मूल वर्धित
कर्त्ता	जउन, जौन जे	जे जिनकनी, जिन्ह कनी
सम्बन्ध	जेंह केजेकर, जेकरा, जेकरीजिन्ह के जिन्हकर/रा/री	
विकारी	जेह, जेहि जेकरा	जिन्ह जिन्हकरा

सम्बन्धवाचक सर्वनाम जे का प्रयोग मगही के अतिरिक्त भोजपुरी, मैथिली, बंगला एवं उड़िया में मिलता है।
मगही–से, ते

	एकवचन		बहुवचन
	एक	दो	मूल वर्धित
कर्त्ता	तउन, तेन, ते	से, सेहु, सेहा से, सेहु, सेहि तेहि, तिन्हकनी	
सम्बन्ध	तेह के	तेकर/रा/री तिन्ह के तिन्हकार/रा/री	
विकारी	तेह, तेहि	तेकर तिन्ह	तिन्हकरा

इस प्रकार हिन्दी में मगही 'से' सर्वनाम से साम्य रखता हूआ रूप 'सो' और 'तो' है लेकिन ते से साम्य रखने वाला कोई रूप नहीं मिलता।

प्रश्नवाचक सर्वनाम – प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। प्रश्नवाचक सर्वनाम के हिन्दी रूप कौन और क्या है जबकि मगही रूप के, का, की है, साथ ही कौंची, कउची, कथी और केथी रूप भी चलता है।
हिन्दी–कौन

	एकवचन	बहुवचन
	कौन	कौन
तिर्यक –	किस	किन, किन्ह

मगही–के

	एकवचन		बहुवचन
		मूल	वर्धित
कर्त्ता	के, कोन, कउन	केकिनकनी,	किन्हकनी
सम्बन्ध	केकरा, केकरा	किनकर	किन्हकर/रा/री
विकारी	केकरा किन्ह,	किन किन्ह का,	किनकरा

हिन्दी– क्या

	क्या	क्या
तिर्यक –	किस	किन

मगही–का अथवा की
मगही में का और की सर्वनामों का व्यवहार निर्जीव वस्तुओं के लिए होता है।

	एकवचन	
	प्रथम रूप	द्वितीय रूप
कर्त्ता	का, की	कौंची, कउची
कर्म	काहे के	कौंची के, कउची के
`करण	काहे से	कौंची से, कउची स
संप्रदान	काहे ला	कौंची ला, कउची ला
अपादान	काहे से	कौंची से, कउची से
सम्बन्ध	काहे के/केर	कौंची के, कउची के
अधिकरण	काहे में	कौंची में, कउची में

लोकगीतों में कौंची, कउची की जगह पर कथी या केथी का भी प्रयोग होता है। यथा– 'कथी के नइआ रे मलहा'' (लोकगीत)।

कुल मिलाकर हिन्दी और मगही के सार्वनामिक रूपों के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि दोनों भाशाओं के शब्द–रूप प्राचीन तथा मध्य भारतीय आर्य भाषाओं के मूल शब्द से विकसित हैं। वियोगात्मक प्रकृति होने के कारण अपभ्रशं तक आते–आते सार्वनामिक रूपों में काफी विकास हो गया। फलतः कुछ स्वतंत्र रूप भी विकसित हो गए। कहीं–कहीं दो–दो सर्वनामों के विकसित रूप एक सार्वनामिक रूप में मिलते है, जो सरलीकरण की प्रवृति के परिचायक हैं। हिन्दी भी खड़ी बोली का विकसित रूप है, किन्तु उसे मानक और व्याकरणिक रूप दे दिए जाने के कारण उसके अनेक क्षैत्रीय रूपों को निराकृत कर दिया गया है। आज भी जो खड़ी बोली कुरू जनपद में बोली जाती है उसमें खड़ी बोली की क्षेत्रीय विशेषताएँ उपलब्ध होती है।

ध्वन्यात्मक वैशिष्ट्य के कारण ही हिन्दी और मगही दो भाषाएँ दृष्टिगत होती है। एक ही पूर्वज की ये दोनों संतान हैं, जिनमें भील और विकसित स्वरूप का अन्तर परिलक्षित होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी व्याकरण–पंडित कामता प्रसाद गुरू, पृ0–74।
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना–डॉ0 बासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ0–108।
3. वही, पृ0–109।
4. मगही व्याकरण को ।–डॉ0 सम्पत्ति अर्याणी, पृ0–22।
5. वही, पृ0–23।
6. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना–डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ0–109।
7. वही, पृ0–109।
8. वही, पृ0–109।

*****